

Article By Teacher

ईश्वर हर समय हमारे साथ हैं



सुश्री मोनिका गुप्ता (प्राथमिक शिक्षिका)

किसी ने सत्य कहा है - लोग अपने चेहरे को साफ रखते हैं जिस पर लोगों की नजर होती है, लेकिन अपने दिल और अपने कर्मों को साफ रखना भूल जाते हैं जिस पर भगवान की नजर होती है।

इसी पर प्रस्तुत है यह कहानी:-

एक दिन मेरे दरवाजे की घंटी बजी। मैं दौड़ा- भागा दरवाजा खोलने के लिए, सामने एक बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व का व्यक्ति खड़ा था। मैंने उनसे पूछा- बताइए क्या काम है?

तो उन्होंने कहा -अच्छा, आज मैं खुद तुम्हारे सामने आया हूँ, तो तुममुझे पहचानने से मना कर रहे हो।

तो मैंने कहा - नहीं, मैं आपको नहीं जानता, कृपया करके अपना परिचय दें।

तो उन्होंने कहा- मैं वही हूँ, जिसने तुम्हें साहब बनाया है, यह जो आज तुम्हारे पास गाड़ी है, बंगला है, पूरा परिवार साथ खड़ा है, यह मेरी ही देन है।

तो मैंने बोला- क्या भगवान हो क्या?

तो उन्होंने बोला- हां, तू हमेशा बोला करता था ना, कि नजर में तो रहते हो, पर नजर नहीं आते, तो आज मैं तेरे सामने आ गया हूँ, आज पूरे दिन मैं तुम्हारे साथ रहूँगा और केवल तुम मुझे देख पाओगे और कोई मुझे नहीं देख पाएगा।

तो मैंने कहा- क्या सच कह रहे हैं आप?

तो उन्होंने कहा- हां, सच में, केवल आज के लिए मैं तुम्हारे लिए तुम्हारे पास आया हूँ। हमारे बीच की बातें चल ही रही थीं कि मां की आवाज आ गई और उन्होंने कहा अरे! दरवाजे पर कोई है ही नहीं, तू बाहरखड़ा-खड़ा कर क्या रहा है? जल्दी अंदर आ।

मैं घबरा गया, सहन गया, कि मां को कोई भी दिखाई क्यों नहीं दे रहा है?

फिर मैं अंदर आ गया और सोफे पर बैठ गया देखा, तो साथ में भगवान भी बैठे हुए हैं। इतने में मां मेरे लिए चाय बना कर ले आई और मेरे सामने रख दी मैंने भगवान से पूछा- आप भी लेंगे, तो उन्होंने सुबह की चाय लेने से इनकार कर दिया। जैसे ही चाय की पहली चुस्की ली, तो मेरी आदत थी कि मैं जोर से चिल्ला कर बोलता था कि- मां, यह कैसी चाय बनाई है? इतनी मीठी चाय है? इतनी चीनी डाल दी है?

फिर मेरी नजर भगवान की तरफ गई, वे मुझे देख रहे थे, उनकी नजर मुझ पर ही थी, तो मुझे लगा भगवान देखेंगे मुझे और कहेंगे कि ये अपनी मां पर किस तरीके से चिल्लाता है, गुस्सा करता है, पर आज मैंने वह चाय चुपचाप पी ली और कहा चाय अच्छी थी। फिर मैं उठकर जाने लगा नहाने के लिए तो वह भी मेरे पीछे-पीछे आने लगे, तो मैंने उनसे कहा- अरे यहां मत आइए, आप बाहर ही रहिए, मैं तैयार हो कर बाहर आता हूँ। बाहर आया पूजा पाठ करने लगा, तो वहां भी वह मेरे साथ थे, और केवल मुझे ही दिख रहे- मैंने आज बड़े मन से आराधना की, पूजा की, कि आज तो भगवान मेरे साथ ही हैं।

उसके बाद खाना पैक करा के, खाना लेकर के बाहर निकला, कार की सीट पर बैठा तो देखा- साथ वाली सीट पर भगवान बैठे हैं, मैंने कहा आज तो कमाल ही हो गया, फिर थोड़ा आगे चले ही थे कि एक फोन कॉल आ गया और मेरी तो आदत थी- गाड़ी चलाते-चलाते कॉल उठाने की, पर मुझे लगा, ये देखेंगे, तो डांट देंगे कि गाड़ी चलाते हुए फोन उठा रहा है। गाड़ी को साइड में लगाया फिर फोन उठाया, थोड़े नियम कायदे फॉलो किए। यह कॉल कोई डील करने के लिए आई थी और मेरी तो आदत थी कि मैं पूछ लेता था कि और इसके ऊपर से मुझे कितना प्रतिशत मिलेगा लेकिन आज तो भगवान साथ में थे, वे देख रहे थे, तो मैंने ऐसा नहीं बोला और उनसे फोन पर बोल दिया कि- आपका काम हो जाएगा, आप ऑफिस आ जाना। अब ऑफिस पहुंचा, तो वहां पर कई बार गुस्सा कर लेता था, बदतमीजी से बात कर लेता था, या कभी बोलते-बोलते गाली भी निकल जाती थी मुंह से। लेकिन उस दिन तो क्योंकि उनकी नजर में था, तो मैंने ऐसा कुछ किया ही नहीं, किसी पर गुस्सा तक नहीं किया, बुरा बर्ताव नहीं किया। सभी सदस्य आज बहुत अचंभित थे कि आज सर को क्या हुआ- आज गुस्सा नहीं कर रहे हैं, शांत हैं, अच्छे से बात कर रहे हैं आज तो सबके साथ? ऐसे ही अच्छे से बर्ताव करते हुए पूरा दिन निकल गया, पूरे दिन में ना मन में काम आया, ना क्रोध, न लोभ, न मोह, कोई भी विकार नहीं आया, क्योंकि आज तो मैं उनकी नजर में था, तो आज मन में था कि आज का एक दिन तो ठीक से जीना है। शाम हुई, वापिस घर जाने के लिए कार में बैठा, तो वे मुझसे पहले कार में बैठे हुए थे, तो मैं उनसे बोला- आप भी सीट बेल्ट लगा लो, थोड़े नियम आप भी फॉलो कर लो, उन्होंने सेट बेल्ट लगा ली। घर पहुंचे तो रात का खाना मेज पर तैयार रखा था, मां इंतजार कर रही थी। मैं कुर्सी पर बैठा, देखा भगवान भी आकर कुर्सी पर बैठ गए। पहली बार अपने जीवन में मैंने वह भोजन देखकर कहा- भगवान पहला निवाला आप लीजिए, उन्होंने ले लिया। खाना खत्म किया, तो मां बोली - आज तो तूने खाने में कोई कमी नहीं निकाली, आज तो तूने चुपचाप खा लिया, आज सूरज पश्चिम से निकला है क्या, आज क्या हो गया? तो मैं बोला - नहीं मां, आज सूर्योदय मेरे हृदय में हुआ है, खाने में कमी निकालूं, ऐसा तो मन में आया ही नहीं, यह तो लगा कि आज प्रसाद खाया है, प्रसाद में कोई कमी थोड़ी ना होती है, प्रसाद तो ऐसे ही बहुत स्वादिष्ट होता है। मेरी मां बहुत अचंभित हुई, वह बोलीं कि क्या बात है, आज तो बेटा बिल्कुल ही बदल गया। उसके बाद थोड़ा टहला, फिर सोने के लिए आया तो देखा वहां पर भी वह मौजूद थे। मैं लेटा, तो वे मेरे सिर पर हाथ फेर रहे थे, कह रहे थे - कि पहले तू किताब पढ़ कर या फोन देखकर या संगीत सुनकर सोने की कोशिश करता था, आज तुझे ऐसा कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ेगी, आज तुझे बहुत सुकून की नींद आएगी। और सच में, मुझे बहुत सुकून की नींद आई। फिर आंख तब खुली, जब माँ जोर से चिल्लाई- उठ जा, जाकर दरवाजा खोल, गेट पर घंटी कब से बज रही है। तब समझ में आया, कि यह तो सब एक सपना था, जो कि मैं गहरी नींद में देख रहा था। लेकिन सच तो यह था कि- मैं जीवन की गहरी नींद में था और उस सपने ने मुझे गहरी नींद से जगा दिया था। एक ऐसा सपना, जिसने मुझे झकझोर दिया और बता दिया, कि हम सच में हमेशा उनकी नजर में हैं। हमें हमेशा अच्छा काम करना चाहिए। सच में हम बहुत गहरी नींद में सोए होते हैं, विकारों से घिरे रहते हैं, एक सपने की आवश्यकता है, जो हमें नींद से जगा दे और यह कहानी वही सपना है।

आशा करती हूँ कि आप भी हमेशा सत्कर्मों की ओर आगे बढ़ेंगे और अपने जीवन में एक ऐसा लक्ष्य अवश्य बनाएंगे जो आपको परमार्थी बना दे, जिससे लोग आपसे प्रेरणा लें और सत्यता की तरफ अग्रसर हों।